

विषय-क्रम

- 1 प्रस्तावना** 1-22
(Introduction)
पादप रोगविज्ञान क्या है ?-1, पादप रोगविज्ञान का कार्यक्षेत्र एवं मानव कल्याण में महत्व-2, पादप रोगविज्ञान का उत्तरदायित्व-7, पादप-रोग क्या है ? अथवा पौधों में रोग की धारणा-7, पादप-रोगों का सामाजिक-आर्थिक महत्व-9, पादप रोगविज्ञान का इतिहास-13, आधुनिक भारत में पादप रोगविज्ञान का इतिहास-18 ।
- 2 पौधों में रोग के कारण तथा रोग विकास** 23-55
(Causes Of Disease in Plants and Disease Development)
रोगजनक क्या है ?-23, पादप रोगजनकों का वर्गीकरण-24, जीवीय रोगजनक अथवा सर्जीव कारण-24, मध्यजीवीय रोगजनक या रूपताएँ-30 अजीवीय रोगजनक या अजैविक कारक अथवा निर्जीव कारण-32, रोगजनक और रोगजनन-33, ऊतकपोषीय नैक्रोटॉफ और जैवपोषीय या बायोटॉफ उतकपोषीय और जैवपोषीय रोगजनकों में अन्तर-34, पौधों में रोग का विकास-36, रोग के घटक : रोग परिमिड 44, पादप रोगों का वर्गीकरण-44, प्राप्तिस्थान अथवा घटना के अनुसार पादप रोगों का वर्गीकरण-47, मुख्य रोग कारणों के अनुसार पादप रोगों का वर्गीकरण 48 ।
- 3 पौधों में रोगों के लक्षण** 56-72
(Symptoms of Diseases in Plants)
रोग-चिह्न एवं रोग-लक्षण की परिभाषा-56, पादप क्रियाओं के प्रभावित होने के आधार पर रोग लक्षण-57, दृश्य रोगजनक या इसकी संरचनाओं एवं अंगों के गुण और आकृति से उत्पन्न चिह्न या लक्षण-58, परपोषी-पौधे पर पड़े कुछ प्रभाव अथवा पौधे में हुए परिवर्तन द्वारा उत्पन्न लक्षण अथवा परपोषी पौधे में आन्तरिक विकारों से उत्पन्न लक्षण-60, पादप रोगों की पहचान-64, कौख अभिगृहीत अथवा कौच की अभिधारणायें या सिद्धान्त-65, रोगचिह्न और रोग लक्षण में अन्तर-66, पांडुरता और हरिमाहीनता में अन्तर-67, अतिवृद्धि और अतिवर्धन में अन्तर-67, किट्ट या रतुआ और कंड या कडवा में अन्तर-67, अंगमारी एवम् म्लानि में अन्तर-68, म्लानि या उकठा और मूल विगलन या सड़न में अन्तर-69 ।
- 4 रोग के विकास पर पर्यावरण या वातावरण का प्रभाव** 73-81
(Effect of Enviromnent on Disease Development)
पर्यावरण या वातावरण का प्रभाव-73, तापमान का प्रभाव-73, आर्द्रता का प्रभाव-74, प्रकाश का प्रभाव-75, वायुमंडल का प्रभाव-76, वायु मंडलीय दाब का प्रभाव-77, वर्षा एवं ओस का प्रभाव, वायु का प्रभाव-78, भूमि अधिक्रिया अथवा मृदा पी-एच मान का प्रभाव-78, वातन का प्रभाव-78, कार्बनिक या जैव पदार्थ का प्रभाव-78, रोग के विकास पर परपोषी पोषण का प्रभाव-79 ।
- 5 कवक—सामान्य विवरण** 82-151
(The Fungi—General Account)
कवक क्या है-82, ? कवकों के मुख्य लक्षण-83, ऐतिहासिक-84, आवास= पारिस्थितिकी-85, कवकों की सामान्य वर्धी संरचनाएँ : थैलस संगठन-87, कवकतंतु-88, पट-91, कवकीय कोशिका-93 : कवकीय कोशिका की परासंरचना, कोशिकाओं का केन्द्रकीय व्यवहार-99, कवकतंतु संरचना के रूपांतरण अथवा विशिष्ट कायिक संरचनाएँ : -100, कवकतंतुओं का समुच्चयन : कवकीय ऊतक-104, कवकों में पोषण-109 ; कवकों में जनन-113 : अलैंगिक जनन, लैंगिक जनन, कवकों में लैंगिक निषेच्यता : विषमजालिकता या विषमथैलसता-128, परालैंगिक चक्र-129 ; कवकों का आर्थिक महत्व-130 ; कवकों का वर्गीकरण-132 ; कवकों का नामकरण-143 ; सहजीवन और प्रतिजीविता में अन्तर-144, चलबीजाणु और अचलबीजाणु में अन्तर-144, चलबीजाणु और ऐस्कसबीजाणु में अन्तर-145, कोनिडियम और बीजाणुधानी में अन्तर-145, संधिबीजाणु और ब्लास्टोबीजाणु में अन्तर-146, माइटोबीजाणु और मायोबीजाणु में अन्तर-146, निषिक्तांड और अण्डगोल में अन्तर-147, निषिक्तांड और युग्माणु में अन्तर-147, युग्मकधानीय सम्पर्क और युग्मकधानीय संयुग्मन में अन्तर-148, समजालिक और विषमजालिक कवकों में अन्तर-148 ।
- 6 उपविभाग : मैस्टिगोमाइकोटीना** 152-201
(Subdivision : Mastigomycotina) (Zoosporic Fungi)
मैस्टिगोमाइकोटीना : सामान्य लक्षण, प्रकृति एवम् प्राप्तिस्थान-152, थैलस-152, जनन-152, वर्गीकरण, वर्ग-ऊओमाइसिटीज़-153, गण-पेरोनाँस्पोरेलीज़-154, कुल-पाइथिएसी-156, वंश : *पाइथियम*-156, वंश : *फाइटोपथोरा*; -157, कुल : एल्ब्यूजीनेसी, वंश : -159, एल्ब्यूगो; -160, कुल: पेरोनाँस्पोरेसी-161, वंश : *स्क्लेरोस्पोरा*-161, वंश : *पेरोनाँस्पोरा*; -163, ऊओमाइसिटीय कवकों द्वारा उत्पन्न पादप रोग-तम्बाकू एवम् सब्जियों की पौद का आर्द्रगलन या आर्द्रपतन रोग-164, पपीते का तना या पाद विगलन रोग-169, आलू की पछेली अंगमारी-173, कूसीफर्स का श्वेत फफोला रोग-181, बाजरे का हरित

बाली या मृदुरोमिल आसिता रोग-186, मटर का मृदुरोमिल आसिता रोग-193, पाइथियम और फ्राइटोफ़थोरा में अन्तर-196, फ्राइटोफ़थोरा और एल्ब्यूगो में अन्तर-197, पेरोनास्पोरा और स्वलेरोस्पोरा में अन्तर-198 ।

7 उपविभाग : ज़ाइगोमाइकोटीना

202-216

(Subdivision : Zygomycotina)

ज़ाइगोमाइकोटीना—सामान्य लक्षण-202, मैस्टिगोमाइकोटीना और ज़ाइगोमाइकोटीना में अन्तर-202, वर्गीकरण-203, वर्ग : ज़ाइगोमाइसिटीज़-203, गण : म्यूकरेलीज़-203: पिन फफूंदी या शर्करा कवक-203, कुल : म्यूकरेसी-204, म्यूकर-204, विषमथैलसता अथवा भिन्नजालिकता-208, राइज़ोपस-209, चलबीजाणु और युग्माणु में अन्तर-212. म्यूकर और पाइथियम में अन्तर-213, म्यूकर और राइज़ोपस में अन्तर-213 ।

8 उपविभाग : ऐस्कोमाइकोटीना

217-288

(Subdivision : Ascomycotina) (The Sac Fungi)

ऐस्कोमाइकोटीना— सामान्य लक्षण-217, मैस्टिगोमाइकोटीना और ऐस्कोमाइकोटीना में अन्तर-217, प्रकृति एवम् प्राप्तिस्थान-218, थैलस-218, जनन—अलैंगिक, लैंगिक-218, ऐस्कस का विकास या परिवर्धन-221, ऐस्कस का प्रत्यक्ष विकास या परिवर्धन-221, ऐस्कस का अप्रत्यक्ष विकास या परिवर्धन-221; ऐस्कोकार्प का बनना-223; बीजाणुधानी और ऐस्कस में अन्तर-225; स्पोरोडोकियम और एसरवुलस में अन्तर-225; पिक्निडियम और पेरीथीसियम में अन्तर-226; क्लोस्टोथीसियम और पेरीथीसियम में अन्तर-226; ऐपोथीसियम और पेरीथीसियम में अन्तर-227; पैराफिसिस (सहसूत्र) और पेरिफिसिस में अन्तर-227; ऐस्कासजन कवकतन्तु और संक्रमण कवकतन्तु में अन्तर-227; वर्गीकरण-228 : वर्ग : हेमीऐस्कोमाइसिटीज़-228, गण : एंडोमाइसिटेलीज़-229, कुल : सैकेरोमाइसिटेसी-229, सैकेरोमाइसीज़; गण : टैफ्रीनेलीन-235, कुल : टैफ्रीनेसी टैफ्रीना; वर्ग : प्लेक्टोमाइसिटीज़-237, गण : यूरोशिएलीज़-238, कुल : यूरोशिएसी-238, ऐस्परजिलस-238, पेनीसीलियम-242; ऐस्परजिलस और पेनीसीलियम में अन्तर-246; म्यूकर और पेनीसीलियम में अन्तर-247, वर्ग : पाइरीनोमाइसिटीज़, गण : एरीसाइफेलीज़-248, कुल : एरीसाइफेसी-248, (चूर्णिल फफूंद या आसिताएँ), गण : क्लेवीसिपिटेलीज़-250, कुल : क्लेवीसिपिटेसी-250, पाइरीनोमाइसिटीय कवकों द्वारा उत्पन्न रोग-251: मटर का चूर्णिल आसिता रोग-251, गेहूँ का चूर्णिल आसिता रोग-256, खीरा वर्गीय पौधों का चूर्णिल आसिता रोग-263, फाइलैक्टोनिया-270, बाजरे का अर्गट रोग-272, धान का मिथ्या अथवा आभासी कंड या हरा कंड-278; चूर्णिल आसिता और मृदुरोमिल आसिता रोगों की तुलना-282; ऐस्परजिलस और एरीसाइफी में अन्तर-283; एरीसाइफी और फाइलैक्टोनिया में अन्तर-284 ।

9 उपविभाग : बेसिडियोमाइकोटीना

289-386

(Subdivision : Basidiomycotina)

बेसिडियोमाइकोटीना— सामान्य लक्षण-289, प्रकृति एवम् प्राप्तिस्थान-290, थैलस-290, जनन—अलैंगिक-293, लैंगिक, बेसिडियम-294, बेसिडियमबीजाणु-295, बेसिडियोकार्प-296; ऐस्कस और बेसिडियम में अन्तर-296, ऐस्कसबीजाणु और टेल्यूटोबीजाणु में अन्तर-297, ऐस्कसबीजाणु और बेसिडियमबीजाणु में अन्तर-297, पिक्निडियम और पिक्निडियम में अन्तर-298; वर्गीकरण, वर्ग : टीलियोमाइसिटीज़-299, गण : यूरिडिनेलीज़ (किट्ट कवक); -299 एकाश्रयी किट्ट और भिन्नाश्रयी किट्ट में अन्तर-301, दीर्घचक्री किट्ट और लघुचक्री किट्ट में अन्तर-301; कुल : पक्सीनिएसी-302, कुल : मेलाम्पसोरेसी-303, गण : अस्टिलेजिनेलीज़ (कंड कवक)-304, यूरिडिनेलीज़ (किट्ट) और अस्टिलेजिनेलीज़ (कंड) की तुलना-305, कुल : अस्टिलेजिनेसी-306, कुल : टिलेटियेसी-307, कंड कवकों में संक्रमण के प्रकार-308, कंड रोगों में पुष्पीय (भ्रूण) संक्रमण एवम् पौद (बीजांकुर) संक्रमण में अन्तर-310; टीलियोमाइसिटीय कवकों द्वारा उत्पन्न पादप रोग—गेहूँ का काला या तना किट्ट-311, गेहूँ का पीला या धारीदार किट्ट-324, गेहूँ का भूरा या पर्ण किट्ट-328, भारत के मैदानों में किट्टों का वार्षिक आवर्तन अथवा महामारी विज्ञान-331, गेहूँ के तीनों किट्टों के प्रमुख पहचान लक्षण-335, गेहूँ का पीला किट्ट और गेहूँ का भूरा किट्ट में अन्तर-338; मटर का किट्ट-338, अलसी का किट्ट-344, पक्सीनिया और यूरोमाइसीज में अन्तर-344, पक्सीनिया और मेलाम्पसोरा में अन्तर-345, मेलाम्पसोरा और यूरोमाइसीज में अन्तर-345, गेहूँ का अनावृत या छिदरा कंड-346, जौ का आवृत कंड-353; गेहूँ का अनावृत कंड तथा जौ के आवृत कंड में अन्तर-357; ज्वार का दाना कंड-359, ज्वार का शीर्ष कंड-363, बाजरा कंड-365, गेहूँ का हिल या पहाड़ी बंट-373, गेहूँ का करनाल बंट, गेहूँ का ध्वज कंड रोग-376; अस्टिलेगो और स्फ्रेसिलोथीका में अन्तर, अस्टिलेगो और टॉलीपास्पोरियम में अन्तर-379, स्फ्रेसिलोथीका और टॉलीपास्पोरियम में अन्तर-380 ।

10 उपविभाग : ड्यूटेरोमाइकोटीना (= ड्यूटेरोमाइसिटीज़, फंजाई इम्पेफेक्टाई) 387-451

(Subdivision : Deuteromycotina) (= Deuteromycetes, Fungi-Imperfecti)

ड्यूटेरोमाइकोटीना—सामान्य लक्षण-387, प्रकृति एवम् प्राप्तिस्थान-388, शैलस-388, जनन, वर्गीकरण-390, वर्ग : हाइफोमाइसिटीज़-390, गण : हाइफोमाइसिटीलीज़ = मोनीलिल्लीज़-391, अनंतिम कुल : डिमेटिएसी-391, महत्वपूर्ण वंशों के विभेदन लक्षण या पहचान के गुण-392, गण : ट्यूबरकुलेरिएलीज़-393, अनंतिम कुल : ट्यूबरकुलेरिएसी-394, अनंतिम वंश : फ्यूज़ेरियम-394, गण : एगोनोमाइसिटीलीज़ = माइसीलिया स्टेरिलिया-394, अनंतिम कुल : एगोनोमाइसिटीसी-396, अनंतिम वंश राइज़ोक्टोनिया-395, वर्ग : सीलोमाइसिटीज़-395, गण : मेलेन्कोनिएलीज़-395, अनंतिम कुल : मेलेन्कोनिएसी-394, अनंतिम वंश : कोलेटोटाइकम-396; अपूर्ण कवकों द्वारा उत्पन्न पादप रोग—आलू की अगेती अंगमारी अथवा अगेता भूलसा रोग-397, जौ का पर्णधारी रोग-403, मक्का की पर्ण अंगमारियाँ-407—मक्का की टर्सिका पर्ण अंगमारी-407, मक्का की मेडिस पर्ण अंगमारी-410; मूंगफली का टिक्का रोग या पर्ण चित्ती-412, धान का प्रध्वंस या ब्लास्ट रोग अथवा सहसामारी रोग-418, अरहर का म्लानि या उकठा रोग-423, अलसी का म्लानि या उकठा अथवा उंकड़ा रोग-428, कपास का मूल विगलन रोग-430, गन्ने का लाल विगलन या लाल सड़न रोग-433; आल्टरनेरिया और हेल्मिन्थोस्पोरियम में अन्तर, आल्टरनेरिया और सर्कोस्पोरा में अन्तर, हेल्मिन्थोस्पोरियम और सर्कोस्पोरा में अन्तर, सर्कोस्पोरा अरेकिडिकोला और सर्कोस्पोरा पर्सेनेटा में अन्तर-442, कोलेटोटाइकम और सर्कोस्पोरा में अन्तर-446, फ्यूज़ेरियम और हेल्मिन्थोस्पोरियम में अन्तर-444, सर्कोस्पोरा और फ्यूज़ेरियम में अन्तर, फ्यूज़ेरियम और कोलेटोटाइकम में अन्तर-445।

11 प्राक्केन्द्रकी अथवा असीमकेन्द्रकी : जीवाणु

452-511

(Prokaryotes : Bacteria)

प्राक्केन्द्रकी या असीमकेन्द्रकी-452, प्राक्केन्द्रकी कोशिका और सुकेन्द्रकी या समीमकेन्द्रकी कोशिका में अन्तर-453; जीवाणु क्या हैं ?-454; कवक और जीवाणु में अन्तर-454; ऐतिहासिक-454; आवास = पारिस्थितिकी-456; जीवाणुओं की आकारिकी-457 : सामान्य आकारिकी, जीवाणुओं की आमाप, जीवाणुओं की आकृतियाँ-गोलाकार जीवाणु-457, गोलाणुओं या कोकस का समुच्चयन या समूहन; सीधे शलाकवत् या छड़ाकार जीवाणु-458, दंडाणुओं या बैसिलस का समुच्चयन या समूहन-457; बंकित या मुड़े अथवा वक्रित छड़ाकार जीवाणु-460, कुछ जीवाणुओं की विशिष्ट आकारिकी-460; जीवाणु कोशिका-460, जीवाणु की संरचना-465; ग्रैम-ग्राही या सवर्णी एवम् ग्रैम-अग्राही या अवर्णी जीवाणुओं में अन्तर-471; परिपार्श्वसूत्री या परिरोमी एवम् एक पार्श्ववहसूत्री या गुच्छकशाभी जीवाणुओं में अन्तर-477; जीवाणु में जनन-472; जीवाणु (प्राक्केन्द्रकी) का वर्गीकरण-477; जीवाणु कार्यिकी-482; स्वपोषित जीवाणु-482; परपोषित जीवाणु-483; स्वपोषित और परपोषित जीवाणुओं में अन्तर-485; जीवाणु श्वसन-485; जीवाणु एवम् तत्वों के चक्र-490; जीवाणुओं का आर्थिक महत्व-487; पौधों के जीवाणुज रोग-490 : आलू का भूरा जीवाणुज विगलन एवम् म्लानि-490, धान की जीवाणुज पर्ण अंगमारी या झूलसा रोग-492, सिट्रस कैंकर या नींबू का खर्रा रोग-497, कपास की जीवाणुज अंगमारी अथवा कोणीय पर्णदाग या कृष्णशाखा रोग-503, गाजर का मृदुविगलन रोग-504, गेहूँ का पीला बाली विगलन रोग, सिट्रस अथवा नींबू का हरित रोग-506।

12 मॉलिक्यूल्ट्स : फाइटोप्लाज़्मा एवम् स्पाइरोप्लाज़्मा

512-523

(Mollicutes : Phytoplasmas and Spiroplasmas)

मॉलिक्यूल्ट्स-512, यथार्थ माइकोप्लाज़्मा के गुण-513, फाइटोप्लाज़्मा के गुण-514, स्पाइरोप्लाज़्मा के गुण, मॉलिक्यूल्ट्स द्वारा उत्पन्न महत्वपूर्ण पादप रोग—गन्ने का घासी प्ररोह या घसैला रोग-515, बैंगन का लघुपत्र या छोटी पत्ती रोग-518, धान का पीत वामनता रोग-519।

13 विषाणु अथवा वाइरस एवम् वाइरॉयड (Viruses and Viroids)

524-570

विषाणु या वाइरस क्या हैं ?-524 विषाणु की परिभाषा-525 विषाणुओं के गुण-526, विषाणु और जीवाणु में अन्तर-526, विषाणुओं की खोज और उनकी प्रकृति-527, विषाणुओं की भौतिक और रासायनिक प्रकृति-528, विषाणुओं का जैविक स्थान, विषाणु सजीव हैं या निर्जीव, विषाणु की संरचना-533, विषाणु का वर्गीकरण, जीवाणुभोजी अथवा जीवाणुविषाणु, जीवाणुभोजी का वृद्धि-चक्र-542 जीवाणुभोजी का कृषि में महत्व-543, तम्बाकू मोझेक विषाणु-543, तम्बाकू मोजेक विषाणु का वृद्धि-चक्र-544, पादप विषाणुओं का संचरण-544, विषाणुजनित पादप रोगों के लक्षण-547, पादप विषाणुओं का प्रबंध-547, वाइरॉयड—वाइरॉयड क्या हैं-548 ? वाइरॉयड की प्रकृति एवम् लक्षण-549, वाइरॉयड की संरचना-549, वाइरॉयड की पुनरावृत्ति या प्रतिभवन-550, वाइरॉयड जनित पादप रोगों के लक्षण-551, वाइरॉयड पादप रोगों का प्रबंध-551; वाइरुसॉयड-552 विषाणु जनित पादप रोग—भिंडी का पीला शिरा मोझेक-553; तम्बाकू मोझेक या किर्मीर रोग-554, आलू के मोझेक या आलू का गुप्त मोझेक-561, आलू का अतिमन्द मोझेक-562; आलू का पत्ती मोड़क या पर्णविल्लन रोग-564, टमाटर का पर्ण कुंचन रोग-566

- 14 **नेमाटोड अथवा सूत्रकृमि (Nematodes)** 571-592
नेमाटोड या सूत्रकृमि क्या हैं-571 ? सूत्रकृमि की परिभाषा-571, पादप रोगजनक सूत्रकृमियों के सामान्य लक्षण-571 सूत्रकृमि की आकारिकी एवम् शरीर-571, सूत्रकृमि जीवन-चक्र, पादप परजीवी सूत्रकृमियों का वर्गीकरण-577: सूत्रकृमि-जनित महत्वपूर्ण पादप-रोग-गेहूँ का सेहूँ या गेगला रोग-578, टमाटर एवम् अन्य सब्जियों का मूल गाँठ या मूल ग्रन्थि रोग-584 ।
- 15 **आवृतबीजी या पुष्पी परजीवी पादप अथवा पुष्पोद्भिद् परजीवी** 593-603
(Angiospermic or Flowering Parasitic Plants or Phanerogamic Parasites)
पुष्पी पादप-परजीवी या आवृतबीजी परजीवी क्या हैं ?-593 अमरबेल (कस्क्यूटा)-593, ब्रांभा (लीरिन्यस), गंठवा (औरोबेन्की)-598, रूखरी (स्ट्राइगा)-600 ।
- 16 **अजैव या अ-संक्रामक तथा अ-रोगजनक अथवा अ-परजीवीय रोग** 604-615
(Abiotic or Non-Infectious and Non-Pathogenic or Non-Parasitic Diseases)
शरीर क्रियात्मक या अपरजीवी रोग क्या होते हैं ?-604 अ-परजीवी पादप रोग-आलू का कृष्णान्तः रोग-606 आम का काला सिरा या ऊतकक्षय-607, धान का खैरा रोग-611, धान का सिरा झुलस या दग्धाग्र-612, नींबू या सिट्रस की जस्ते या जिंक की न्यूनता-613, अमररूढ़ की जिंक या जस्ते की न्यूनता-614 ।
- 17 **पादप-रोगों के अध्ययन की विधियाँ** 616-635
(Methods of Studying Plant Diseases)
पादप रोगों का प्रत्यक्ष अवलोकन-616, सूक्ष्मदर्शीय परीक्षण-616, पृथक्करण और शुद्ध संवर्धन विधियाँ-काँच के सामान की तैयारी-617, संवर्धन माध्यम तैयार करना-618, निर्जमीकरण या निर्जीविकरण अथवा विसंक्रमण-622, पृथक्करण, शोधन-623 : शुद्ध संवर्धन की पृथक्करण विधियाँ-625, संरोपण या निवेशन-628 पादप रोगजनकों की अभिरंजन विधियाँ-629 ।
- 18 **पादप रोग प्रबंध के सिद्धान्त एवम् प्रक्रियाएँ** 636-710
(Principles and Practices of Plant Disease Management)
‘रोग नियंत्रण’ अथवा ‘रोग प्रबन्ध’-636, पादप रोग प्रबन्ध-637, पादप रोग प्रबन्ध की विधियों एवम् प्रक्रियाओं का वर्गीकरण-638, पादप रोग प्रबन्ध के सामान्य सिद्धान्त-641, पादप-रोग प्रबन्ध के सिद्धान्तों, प्रक्रियाओं तथा रोग प्रिरेमिड के घटकों एवम् रोगजनन के तत्वों के बीच सम्बन्ध, रोगजनक का पलायन या परिवर्जन-643, निवेश द्रव्य का अपवर्जन-644, रोगजनक का उन्मूलन-644, रक्षी या संरक्षी उपाय अथवा रक्षण-646, परपोषी में रोग प्रतिरोध का विकास-646 रोगी पौधे की चिकित्सा या उपचार-648; पादप रोग प्रबन्ध विधियाँ एवम् प्रक्रियाएँ : पादप रोग प्रबन्ध के लिए विनियमित विधियाँ: पादप रोगजनकों का जैविक या जैव नियंत्रण-661 : पादप रोगजनकों के जैव नियंत्रण के लिए उपगमन या मार्ग-662, मृदु में निवेशद्रव्य या संरोप का जैव नियंत्रण, पादप पृष्ठों या सतहों का जैव रक्षण या जैविक सुरक्षा अथवा संक्रमण के विरुद्ध जैव रक्षण-666, अन्योन्य प्रतिरक्षण एवम् प्रेरित प्रतिरोध-668; पादप रोग प्रबन्ध के लिए कर्षण प्रक्रियाएँ-669: रोगमुक्त, प्रवर्धन या प्रचारण सामग्री का उत्पादन एवम् प्रयोग-670 रोगआपतन न्यूनतम करने के लिए सस्य कर्म का समायोजन-672 कर्षण या कृषि प्रक्रियाओं के परिवर्तन द्वारा पादप रोग प्रबन्ध-672, क्षेत्र या खेत एवम् पादप स्वच्छता या सफाई-678; रोग प्रबन्ध के लिए परपोषी प्रतिरोध-682: रोग पलायन, रोग सहनता अथवा सहनशीलता एवम् वास्तविक या यथार्थ प्रतिरोध-682, आनुवंशिक प्रतिरोध के प्रकार-683, रोग प्रतिरोधी किस्मों का विकास-685, जैव प्रौद्योगिकी द्वारा रोग प्रतिरोध के लिए प्रजनन-687, रोग प्रतिरोध की विफलता या फेल होने के कारण-688, रोग प्रतिरोधी किस्मों का प्रबन्ध-688 जीन हेर-फेर के अतिरिक्त दूसरे साधनों द्वारा प्रतिरोध प्रेरण-688; आविषालु रसायनों द्वारा रोग प्रबन्ध अथवा रासायनिक नियंत्रण द्वारा प्रत्यक्ष रक्षण-689: कवकनाशी क्या हैं-689 ? एक आदर्श या उत्तम कवकनाशी के गुण या विशेषताएँ-690 पादप रोग प्रबन्ध के लिए रसायनों के अनुप्रयोग की विधियाँ-691 पादप रोग प्रबन्ध के लिए प्रयोग होने वाले रसायनों के प्रकार-गंधक कवकनाशी-694, ताप या कॉपर कवकनाशी-696, पादप कवकनाशी, विवोनोन कवकनाशी, ऐरोमैटिक यौगिक या बेन्जीन कवकनाशी-700, थैलिमाइड या विषम वक्र्रीय नाइट्रोजन यौगिक-701 सर्वांगी कवकनाशी-702 प्रतिजैविक-703 सर्वांगी कवकनाशी और प्रतिजैविक में अन्तर-705, मूल कृमिनाशी-706 एकीकृत या समन्वित (समेकित) पादप रोग प्रबन्ध-705: गेहूँ में एकीकृत या समन्वित रोग प्रबन्ध कार्यक्रम-706; रोगों, हानिकारक कीटों एवम् प्रदूषण का वैदिक अनुष्ठान एवम् जैव पदार्थों के प्रयोग द्वारा नियंत्रण-706 । पादप संगरोध या पादप संपर्करोध-649, पादप संगरोध का वर्गीकरण-652 निरीक्षण एवम् प्रमाणीकरण-655; बीज प्रमाणीकरण-655; पादप रोग प्रबन्ध के लिए भौतिक विधियाँ-656
- 19 **तकनीकी शब्दों की परिभाषायें (Definitions of Technical Terms)** 711-721
20. **पादप रोगविज्ञान के कुछ उपयोगी ग्रन्थ** 722-728
(Some useful books of Plant Pathology)